।।श्रीराधा।।

रास पूर्णिमा - २०२२

आज गुपाल रास रस खेलत, पुलिन कल्पतरू तीर री सजनी।
सरद विमल नभ चंद विराजत, रोचक त्रिविध समीर री सजनी।।
चंपक बकुल मालती मुकुलित मत्त मुदित पिक कीर री सजनी।
लेत सुधंग राग रंग नीको, व्रज जुवतिन की भीर री सजनी।।1।।
मधवा मुदित निसान वजायौ, व्रत छाड्यौ मुनी धीर री सजनी।
हित हरिवंश मगन मन स्यामा, हरत मदन मन पीर री सजनी।।2।।

भावार्थ- *हे सखि! आज यमुना के पुलिनवर्ती कल्पवृक्षों के समीप गोपाल श्री श्यामसुन्दर रास क्रीड़ा में निमग्न है। शरद के स्वच्छ आकाश में चन्द्रमा सुशोभित है तथा हृदय को आह्लादित करने वाला शीतल, मन्द एवं सुगन्धित पवन चल रहा है। चम्पा, मौलश्री और मालती आदि के पुष्प खिले हुए हैं। कोकिल एवं शुक आनन्द में डूबे हुये मतवाले हो रहे हैं। वहाँ यूथ-की-यूथ ब्रजबालाएँ शुद्ध स्वरूप में राग-रागिनियों का आलाप ले रही हैं। आकाश में इन्द्र ने भी आनन्दित होकर नगाड़े बजाये। इस महान् उत्सव से आकर्षित होकर धैर्यवान मुनियों ने भी अपने संयम-नियमादिक को बहा दिया। श्री हितहरिवंशजी कहते हैं कि उल्लास में भरकर श्री राधा प्रियतम श्रीश्यामसुन्दर की अत्यन्त प्रीति-जनित गम्भीर व्याकुलता को प्रशमित कर रही हैं।*

.....

स्तुति

नमस्तस्मै भगवते कृष्णायाकुंठमेधसे।
राधाधर सुधासिन्धौ नमो नित्य विहारिणे।।

ऊँ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणत्क्लेशनाशाय गोविन्दाय नमोः नमः।।

राधांकृष्ण स्वरूपांवै कृष्णं राधा स्वरुपिणम्।
कलात्मानं निकुंजस्थं गुरू रूपं सदा भजे।।

धन वृन्दावन धाम है, धन वृन्दावन नाम।
धन वृन्दावन वृक्ष जो सुमिरै स्यामा स्याम।।
जमुना जल अँचवन करैं, जमुना जल में न्हाहिं।
जहाँ-जहाँ जमुना बहै, तहाँ-तहाँ जम नाहि।।

अष्ट सखी करतीं सदा सेवा परम अनन्य।
राधा-माधव-जुगलकी, कर निज जीवन धन्य।।
इनके चरण-सरोज में बारंबार प्रनाम।
करुना कर दें श्रीजुगल-पद-रज-रति अभिराम।।

राधां रासेश्वरीं रम्यां गोविन्दमोहिनीं पराम्।
कृष्णप्राणाधिके राधे! नमस्ते परमेश्वरी।।

यो ब्रह्म रूद्र शुक नारद भीष्ममुख्यै रालक्षितो न सहसा पुरूषस्यतस्य।
सद्योवशीकरण चूर्णमनन्त शक्तिम् तं राधिका चरणरेणुमनुस्मरामि।।

.....

गाओ सखी आरती प्रिया और प्यारे की
भानु दुलारी की गिरवर धारी की, हो रास बिहारी की।
कंचन थार कपूर सजाओ, धूप दीप कर चँवर ढुलाओ
बलि बलि जावो सखी कुँज बिहारी की
भानु दुलारी की गिरवर धारी की, हो रास विहारी की।
मोर मुकुट कुंडल वनमाला मुरली अधर धरे बैठे नन्दलाला
हिय में लखोरी छवि बाँके बिहारी की
भानु दुलारी की गिरवर धारी की, हो रास बिहारी की।
सीस चन्द्रिका की छवि न्यारी स्वेत बरन सोहे तन सारी
ललित किशोरी राधे वरसाने वारी की
भानु दुलारी की गिरवर धारी की, हो रास बिहारी की।
बैठे सिंहासन दिए गलबाहीं रसिक जनन हिय बसत सदा ही
ब्रज जीवन धन रास बिहारी की भानु दुलारी की गिरवर धारी की, हो रास बिहारी की।

भावार्थ- *हे सखी! प्रिया और प्यारे की आरती गाओ। वृषभानु जी की लाडली की और गिरिराज पर्वत को धारण करने वाले भगवान् श्री कृष्ण की आरती गाओ। सोने के थाल पर कपूर सजाओ। धूप और दीपक जला कर चँवर ढुलाओ। हे सखि तुम कुंजों में विहार करने वाले बिहारी जी पर वारि वारि जाओ। श्री नन्दलाल मोर मुकुट, कुंडल और वनमाला धारण किये हुये, होठों पर मुरली धरे विराजित हैं। श्री रास विहारी की यह छवि हृदय में निहारकर भानुलली और गिरिवरधारी की आरती गाओ। श्री राधाजी के शीश पर चन्द्रिका की छवि बहुत ही सुन्दर लग रही है। तथा उनके गौरवर्ण शरीर पर साड़ी अत्यन्त शोभा पा रही है। बरसाने वाली वृषभानु लली और गिरिवर धारी श्री कृष्ण की आरती गाओ। श्री प्रिया प्रियतम गले में बांहे डालकर सिंहासन पर बिराजित है, उनकी यह छवि रसिक जनों के हृदय में सदा ही बसी रहती है। ब्रज के जीवनधन रास बिहारी की और वृषभानु लली की आरती गाओ।*

.....

हे ललिते गुन आगरी! तुम हो चतुर प्रवीन।
सुन्दर साज समाज कौं बाँधो ठाठ नवीन।।
बीन विशाखा जी गहै चित्रा चतुर मृदंग।
साज सितार सुदेवीजी तुम ललिते मुंहचंग।।
सारंगी श्री हरि प्रिया हितू रवाब विसाल।
मधुर अलापैं उच्च स्वर इंदूलेखिका बाल।।
मनमोहन मुरली गहैं, मैं नाचूँ सजि साज।
नदी बहै पुनि प्रेम की ऐसौ सजै समाज।।

भावार्थ- *हे गुणों की खान ललिते! तुम चतुर और निपुण हो। सुन्दर सामग्री को जुटाकर एक अनोखी व्यवस्था*

करो। विशाखा जी वीणा सम्भालें, चतुर चित्राजी मृदंग। सुदेवीजी सितार सम्भालें और तुम ललिता मुहचंग। श्री हरि प्रियाजी सारंगी सम्भालें और हितु विशाल रवाब। इन्दूलेखा जी उच्च स्वरों में मधुर आलाप लें। श्री श्यामसुन्दर मुरली बजाएँ, मैं सब के साथ नाचूँ। ऐसी व्यवस्था हो कि प्रेम की नदियाँ बहें।

या विधि आज प्रबंध करो सखि! आनन्द की रस धार बहैगी।
प्रीतम के मन की रुचि है यहि, मेरे हिये अभिलाषा पुजैगी।।
तुम सबहू सुख पावौ महा रस, आनन्द बेलि हिये उलहैगी।
बरसै घन आनन्द प्रेम महा, तब सहजहि बेली फूलि फरैगी।।

भावार्थ- *हे सखी! आज इस प्रकार से प्रबंध करो कि आनन्द की रस धार बहे। प्रीतम के मन में यही रुचि है, और ऐसा करने से मेरे मन की भी अभिलाषा पूरी होगी। इस महारास के प्रवाह में तुम सब सुख पाओ, हृदय में आनन्द की छटा से जब प्रेम की वर्षा होगी तब यह लता सहज ही (बिना किसी प्रयत्न के) फूलेगी-फलेगी।*

.....

रास मंडल रच्यो रसिक हरि राधिका
तरनिजा तीर वानीर कुंजे।
फूले जहाँ नीप नव बकुल कुल मालती
माधुरी मृदुल अलि पुंज गुंजे।।

सुमन के गुच्छ अलि सुच्छ चल बात बल
तरू मनो चहुँ दिसि चँवर करहीं।
करत रव सारि सुक पिक सु नाना विहँग
नचत केकि अधिक मनहि हरहीं।।

त्रिगुन जहाँ पवन को गवन नित ही रहत
बहत स्यामल तटनि चल तरंगा।
विविध फूले कमल कोक कलहंस कुल
करत कल कुणित अरू जल विहंगा।।

हेम मंडल रचित खचित नाना रतन
मनहुँ भू करन कुंडल विराजे।
बंस वीनादि मुहचंग मिरदंग वर
सबन मिलि मधुर धुनि एक बाजै।।

नचत रस मगन वृषभानुजा गिरिधरन
बदन छवि देखि सुधि जात रति मदन की।
मुकुट की थरहरनि पीत पट फरहरनि
तत्त थेई करनि हरनि सब कदन की।।

दसनि दमकनि हँसनि लसनि अँग अँग की
अधर वर अरुन लखि उपमा को है।
दृग जलज चलनि ढिग कुटिल अलकनि झुलनि
मनहुँ अलि कुलन की पाँतियाँ सोहै।।

लाग अरु डाट पुनि उरप उरमेइ
तिरप एक एक गति लेत भारी।
करत मिलि गान अति तान बंधान सों
परस्पर रीझि कहैं वार्यो वारी।।

चारु उर हार वर रतन कुंडल ललित
हीर वर वीर स्रवननि सुहाई।
नील पट पीत तन और गौर स्यामल मनौ
परस्पर घन अरु दामिनि दुराई।।

सखी चहुँ दिसि बनी कनक चंपक तनी
चंद वदनी इक एक तें आगरी।
नचत मंडल किए चित्त दुहु तन दिए
भूलि गई सकल अप अपनी सुधि नागरी।।

रमत इहि भाँति नित रसिक सिरमौर दोऊ
संग ललितादि लिए सुघरि सुंदरि अली।
मनसि वृंदावन बसहुँ जीवन धना
व्रजराज सून वृषभानुजू की लली।।

भावार्थ- *यमुना के किनारे वेत्र-कुंज में रसिक शिरोमणि श्रीश्यामसुन्दर एवं श्रीराधा ने रास-मण्डल की रचना की है। वहाँ पर कदम्ब, मौलश्री एवं मालती के नये-नये असंख्य पुष्प खिल रहे हैं। उनके माधुर्य से आकृष्ट होकर भौंरो के समूह मृदुल गुंजार कर रहे हैं। फूलों के गुच्छों को स्पर्श करता हुआ अत्यन्त निर्मल पवन चल रहा है। उसके प्रभाव से हिलते हुए हरे-हरे वृक्ष ऐसे लग रहे हैं मानो चारों ओर चँवर डुला रहे हैं। मैना, तोता, कोयल तथा और भी अनेक सुन्दर-सुन्दर पक्षी कलरव कर रहे हैं। नृत्य करते हुए मोर चित्त को और भी अधिक खींच लेते हैं। शीतल, मन्द एवं सुगन्धित समीर का वहाँ सदा ही संचार होता रहता है उसकी गति से तरंगे चंचल हो उठती हैं और ऐसी चंचल तरंगों से युक्त श्यामलवर्णा यमुनाजी बहती रहती हैं। यमुनाजी में विविध प्रकार के कमल (जैसे उत्पल कुशेशय, इन्दीवर इत्यादि) खिले हुए हैं तथा चक्रवाक, कलहंसों का समूह एवं अन्य जाति के जल-पक्षी भी मधुर स्वर कर रहे हैं। रास की गोलकार स्वर्ण-वेदी नाना रत्नों से जुड़ी हुई है। वह ऐसी लगती है मानो पृथ्वी का कर्ण-कुण्डल हो। बांसुरी एवं वीणादिक तार-यंत्र, मुहचंग और अच्छे-अच्छे मृदंग - ये सभी मिलकर एक स्वर में मधुर ध्वनि उत्पन्न कर रहे हैं। रस में मग्न होकर राधा-माधव नाच रहे हैं। उनके मुख की शोभा देखकर रति और काम भी बेसुध हो जाते हैं। मुकुट के थरहराने से, पीतपटके फरहराने से तथा ताता-थेइके उच्चारण से जो झाँकी उभरी, वह सारे क्लेशों का निवारण करने वाली है। दाँतों की चमक, मन्द हास्य, प्रत्येक अंग की शोभा तथा मनोहर अधरों की अरुणिमा - इन सबके दर्शन की तुलना में और क्या है? कमलदल से सुन्दर एवं चपल नेत्रों के समीप ही कुंचित केश की लटें ऐसी झूल रही हैं मानो भ्रमरों की पंक्तियाँ सुशोभित हों। स्नेहपूरित प्रतिस्पर्धा से वे उरप-तिरप आदि एक-एक गति-विशेष को बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रदर्शित करते हैं। वे बंधानयुक्त तान लेते हुए परस्पर मिलकर अत्यन्त सुन्दर गा रहे हैं और एक दूसरे पर मुग्ध होकर 'बलिहारी जाऊँ' कह रहे हैं। सुन्दर वक्षःस्थल पर रत्नों का मनोहर हार है और हे सखि! कानों में श्रेष्ठ*

हीरे के बड़े ही सुन्दर कुण्डल सुशोभित हो रहे हैं। श्री राधिका के गोरे अंगों पर नीला परिधान एवं श्रीकृष्णके श्याम शरीर पर पीताम्बर ऐसे लग रहे हैं मानों एक ओर बादल ने बिजली को अपनी गोद में छिपा लिया है और दूसरी ओर विद्युच्छटाने वारिदमाला को आक्रोड़ित कर लिया है। उन्हें चारों ओर से सोने एवं चम्पा के फूल-जैसे वर्णवाली चन्द्रमुखी सखियाँ घेरे हुए हैं। वे सब शोभा में एक-से-एक बढ़कर हैं। वे परम प्रवीण सखियाँ गोलाकार मण्डल बनाकर नाच रहीं हैं। उनका चित्त राधामाधव में ऐसा लीन है कि सब अपनी-अपनी सुधि खो बैठी हैं। ललितादिक सखियों को साथ लेकर रसिकों के शिरोभूषण ये दोनों इस प्रकार नित्य ही विहार किया करते हैं। ये सभी सखियाँ चतुर तथा सुन्दर हैं। वृन्दावनदेवजी कहते हैं कि हे मेरे जीवनधन ब्रजराज लाडिले एवं वृषभानु लाडिली! तुम दोनों मेरे हृदय-कमल में निवास करो।

.....

वेणु लोगा जिण माधव नाचै। रुमझूम वाघै घूंघर ड़ी।।
ताल पखावज वगाड़े री गोपी। कृष्ण वगाड़ै मीठी बांसलड़ी।।
दादुर मोर पपईया रे बोले। मीठि मीठि बोले कोयलड़ी।।
ताल पखावज वगाड़े री गोपी। कृष्ण वगाड़ै मीठी बांसलड़ी।।
धनी वृन्दावन धनी वंशीवट। धनी नरसैया नी जीवलड़ी।।
ताल पखावज वगाड़े री गोपी। कृष्ण वगाड़ै मीठी बांसलड़ी।।

भावार्थ- *बाँसुरी लिए हुए माधव (श्रीकृष्ण) नत्य कर रहे हैं। उनके पैरों में बंधे घुँघरू रूम-झूम ध्वनि कर रहे हैं। गोपियाँ पखावज तथा अन्य वाद्य यंत्र बजा रहे हैं तथा श्रीकृष्ण मीठी बाँसुरी बजा रहे हैं। दादुर, मोर तथा पपीहा मधुर वाणी से बोल रहे हैं तथा कोयल भी मीठे स्वर से बोल रही है। यह वृन्दावन धाम धन्य है तथा यह वंशीवट धन्य है और इसी से नरसी जी का जीवन भी धन्य हो गया है।*

आजु रस रास रच्यौ पिय प्यारी।
फूलि रह्यौ वृंदावन चहुँ दिस सरद निसा उजियारी।।
कुँवरि प्रबीन सकल गुन आगरि तैसेइ लाल बिहारी।
हिय हुलास हरखत सुख बरखत आनँद मगन महा री।।
प्रीतम के कर तें लै स्यामा मुरली अधरनि धारी।
नइ इक भाँति बजाइ रिझाये होत लाल बलिहारी।।
ललना लाल नेह नव रंगी निर्तत कला बिस्तारी।
वृन्दावन हित रूप नागरी नागर सब सुखकारी।।

भावार्थ- *आज प्रिया और प्रियतम रास रच रहे हैं। शरद ऋतु की रात्री में चन्द्रमा की चाँदनी से सम्पूर्ण वृन्दावन प्रकाशित हो रहा है। श्रीप्रिया अत्यन्त चतुर एवं समस्त गुणों की खान हैं और वैसे ही गुणों के आगार रसिक बिहारी श्री कृष्ण हैं। मन में अत्यन्त उल्लसित होकर युगल जोड़ी चारों ओर रस का वितरण कर रही है तथा सभी सखियों को आनन्दित कर रही है। इतने में श्रीप्रिया श्यामसुन्दर के हाथ से मुरली लेकर अपने अधरों से लगा लेती हैं और उसमें इतनी मधुर एवं नवीन तान छेड़ती है कि जिसे सुनकर रसिक बिहारी उन पर रीझ जाते हैं। प्रिया-प्रियतम प्रेम में रंगे अपनी पूर्ण कलाओं का विस्तार करते हुए नृत्य कर रहे हैं। श्री वृन्दावनदास जी कहते हैं कि प्रिया और प्रियतम ही सब सुखों के आश्रय हैं।*

.....

बन नाचे नट नीको आली नन्द को किशोर।
राधे जगत नचायो तेरी ऽ भौं की मरोर।।
ब्रज के किशारे तौ पै डारूँ तृण तोर प्यारो।
सुनी मुरली की धुन मेरो मन भयो मोर।।
कमल कली को ऽ रँग भानु की लली को स्यामा।
मुख चंद्रहुँ सो नीको मेरे नयना हैं चकोर।।
ग्रीवा की लटक हरे नयन की मटक।
करे चित्त पै झपट पीरे पटका को छोर।।
मुख की भुराई भाल बिंदिया सजाई तेरी।
मानो छीर सिन्धु माहीं बाल रवि उग्यो भोर।।
नयनन बसाय तोहैं राखूँगी छिपाये प्यारो।
कहूँ भाग न जाय मेरी मुँदरी को चोर।।
मन स्याम रँग दिन रैन राखो सँग प्यारी।
कहाँ जायेगी पतँग तेरे हाथ में है डोर।।

भावार्थ - *हे राधे, देखो! नटनागर नन्दकिशोर श्रीकृष्ण वन में अति सुन्दर नृत्य कर रहे हैं। ऐसा क्यों न हो! जब आपकी भृकुटि के विलास से समस्त जगत नाचता है - तो आपके प्रियतम श्रीकृष्ण नृत्य में प्रवृत्त हों तो इसमें आश्चर्य ही क्या है? श्रीराधा कहती हैं, हे बृजकिशोर! मैं आप पर तृण तोड़कर अपना सर्वस्व बलिहार देती हूँ (समर्पण कर देती हूँ)। आपकी मुरली की टेर सुनकर तो मेरा मन मोर के समान नृत्य करने लगता है। श्रीकृष्ण कहते हैं हे वृषभानु की पुत्री राधे! आपका रंग कमल कली के समान अरूणाई लिये हुए है। आपका मुख चन्द्रमा से भी अधिक सुन्दर है और मेरे नेत्र चकोर पक्षी के समान उनको निहारते-निहारते अघाते नहीं हैं। श्रीराधा कहती हैं, हे प्यारे आपका ग्रीवा (गर्दन) को एक ओर झुका देना एवं नयनों का मटकाना मेरे मन को हर लेता है, उससे मेरे मन का भटकाव रूक जाता है (अर्थात् मेरा मन आपकी इस अदा को निहारने में टिक जाता है)। आपके पीले पटके की छोर इतनी सुंदर है कि उसका दर्शन मेरे मन में (बिजली के समान) कौंध जाता है। श्रीकृष्ण कहते हैं , हे राधे! आपके मुख पर जो पीलेपन की झांकी है, उस पर जो आपने अपने सुंदर माथे के मध्य में लाल बिंदी सजाई है - ऐसे लगता है जैसे दूध का सागर हो, और उसमें सुबह का लाल-लाल सूरज उग रहा हो। श्रीराधा कहती हैं, हे प्यारे! आपको नैनों में बसाकर, छिपाकर रखूँगी। (डर लगता है कि) मेरी अँगूठी के चोर (आप) कहीं भाग न जाएं (यहाँ यह एक अन्य लीला की ओर संकेत है जिसमें श्रीकृष्ण राधाजी की अँगूठी चुराकर ले जाते हैं) श्रीकृष्ण कहते हैं , हे राधे! मेरा मन तो निरंतर आपके रंग में रंगा हुआ है, मुझे आप कृपा करके दिन-रात अपने पास ही रखिएगा। वैसे भी ये पतंग (अर्थात् मैं) कहाँ जायेगी अब मेरी डोर आपके ही हाथ में है।*

सोनजुही की बनी पगिया अरू चमेली को गुच्छ रहयौ झुकि न्यारो।
द्वै दल फूल कदंब के कुंडल सेवती जामाहु घूम घुमारो।।
नौ तुलसी पटुका घनस्याम गुलाब इजार चमेली को न्यारो।
फूलन आज विचित्र बन्यौ देखो कैसो सिंगारयो है प्यारी ने प्यारो।।

और इधर देखो! राधा प्यारी ने अद्‌भुत पुष्प-रचना के द्वारा प्यारे श्रीकृष्ण चन्द्र का कैसा शृंगार किया है। सोनजुही पुष्पों की तो पगड़ी बनी हुई है, जिसमें चमेली का एक गुच्छा निराली अदा से लटक रहा है। कदम्ब पुष्पों का खूब घेरदार जामा है। नीलसुन्दर की विविध रंगवाली चादर की छवि और भी निराली है, जिसमें नाना वर्णों के नव तुलसीदल, विभिन्न प्रकार के गुलाब, गेंदा और चमेली के पुष्पों का उपयोग किया गया है।

नाचत बलभद्र वीर संग लिये युवती भीर।
रासरच्यो दिव्य तीर तनिया कलिन्द की।।
नाच उठी यमुन लहर चन्द चाँदनी को पहर।
पीत पटि लहर-लहर नाची नन्द-नन्द की।।

भावार्थ- *बलरामजी के भाई श्रीकृष्ण युवतियों की भीड़ को लेकर नृत्य कर रहे हैं। पीताम्बर धारण किये हुए भगवान् श्रीकृष्ण यमुनाजी के दिव्य तट पर रास कर रहे हैं। यमुना की लहरें भी नृत्य कर रही हैं तथा उस समय सभी ओर चन्द्रमा की चाँदनी फैली हुई है। नृत्य करते हुए नन्द के पुत्र (श्रीकृष्ण) का पीला पटका भी हिल रहा है।*

नचे बाल तालन पै श्रम बिन्दु भालन पै।
सजी कमल मालन पै अवलि अलि वृन्द की।।
राधा रंग राच रही पलक खोल जाँच रही।
नैनन में नाच रही मूरति गोविन्द की।।

भावार्थ- *सभी ब्रजबालाऐं संगीत की ताल पर नृत्य कर रही हैं, जिससे उनके मस्तक पर श्रम बिंदु झलक रहे हैं। समस्त सखी मण्डल के वक्षःस्थल पर कमलों की मालाएं सजी हुई हैं जिसपर भौरों की पंक्तियाँ मँडरा रही हैं। राधारानी इस रचे हुए रंग को पलक खोलकर निहार रही है। उनकी आँखों में गोविन्द की मूर्ति नृत्य करती हुई प्रतीत हो रही है।*

सारी सँवारी है सोनजुही अरू जूही की तापै लगाई किनारी।
पंकज के दल को लहँगा अंगिया गुलबाँस की सोभित न्यारी।।
चम्पा को हार हमेल गुलाब को मौर की बेंदी दे भाल सँवारी।।
फूलन आज बिचित्र बन्यो देखो कैसी सिंगारी है प्यारे ने प्यारी।।

भावार्थ - *देखो! प्यारे श्रीकृष्ण ने अद्भुत ढंग से सजाकर प्रियाजी का आज कैसा शृंगार किया है! सोनजुही पुष्पों की साड़ी सजायी है, जिसमें जूही की किनारी लगी हुई है। कमल पुष्प दलों से लहँगा बनाया है और गुलबाँस की कञ्चुकी (चोली) अपनी निराली ही छटा दिखा रही है। चम्पा के पुष्पों का हार बनाया है और गुलाब का हमेल है तथा ललाट पर मोलगिसरी के फूल की बेदी शोभा दे रही है।*

तालन पै ताल पै तमाल माल मालन पै। वृन्दावन वीथिन विहार वंशी वट पै।।
छित पै छात पै छाजत छटान पै। ललित लतान पै श्री लाडली की लट पै।।
कहे पद्माकर अखण्ड रास मण्डल पै। मण्डित उमण्डित श्री कालन्दी के तट पै।।
कैसी छवि छाई आज सरद जुन्हाई। कैसी छवि छाई या कन्हाई के मुकुट पै।।

भावार्थ - *श्री वृन्दावन की शरद रात्रि की शोभा का वर्णन करते हुए रसिक कवि पद्माकर कहते हैं कि ताल और तमाल वृक्षों की श्रेणियों पर, श्री वृन्दावन की सुन्दर विहार - पगडंडियों पर, निकुंज भवनों के छज्जों पर, सुन्दर लताओं पर, श्री लाडिली जी की गिरती हुई कुन्तलों पर, यहाँ तक कि सम्पूर्ण रास मंडल पर, शरद रात्रि की चाँदनी अतिशय सुन्दर ढंग से चमक रही है। और इस चाँदनी की सबसे सुन्दर छटा तो श्री कन्हैया के मुकुट से छिटक रही है।*

.....

आज गोपाल लिये ब्रजबाल तो रास रच्यो वंसीवट ठैया।
बीन पखावज बाँसुरी की धुन आनन्द सिंधु बहयो तीहि ठैया।।
भाव उठ्यो हिय राधिका के मोर बने नन्दराई को छैया।
उर अंतरजामी हिय की हरी तहाँ आये गयो बनी मोर कन्हैया।।

भावार्थ- *श्रीकृष्ण ब्रजबालाओं को साथ लेकर वंशीवट में रास कर रहे हैं। वीणा, पखावज तथा बांसुरी की धुन से उस स्थान पर आनन्द का समुद्र बह रहा है। श्रीराधा के मन में यह भाव उठा कि नन्दजी के पुत्र (श्रीकृष्ण) मोर का रूप धारण करें। सबके हृदय की जानने वाले भगवान् श्रीकृष्ण मोर बनकर वहाँ आ गये।*

"जय-जय राधेश्याम"

सेवती चमेली बेली मालती निवारी कुंद
खिल रहे फूल खिली चाँदनी हूँ चंद की
नुपूर सितार बीन बाँसुरी मृदंग बाजे
नृत्यति गोपाल तीर तनिया कलिंद की
नाच उठे मोर, चारों ओर सो प्रकाश देखि
कमलन पै नाच रही अवली अलिवृन्द की
आगे गति नार एक नाच रही केसर में
बेसर में नाच रही मूरत गोविन्द की

भावार्थ- *कुंजों में सफेद फूल, चमेली तथा जूही की लतायें हैं। वहाँ फूल खिले हुये हैं और चन्द्रमा की चाँदनी छिटक रही है। नूपुर, सितार, वीणा, बाँसुरी तथा मृदंग बज रहे हैं। यमुना जी के तट पर पीताम्बर पहने हुए गोपाल नृत्य कर रहे हैं। चारों ओर उस दिव्य प्रकाश को देखकर मोर नाच उठे तथा कमलों पर भ्रमर-पंक्ति नृत्य कर रही है। एक सखी तेज़ गति लिए नाच रही है और उसके बेसर में श्यामसुन्दर की मूर्ति नृत्य करती हुई झलक रही है।*

लै फिरकी खिड़की ते गिरी।
सखी आए गयो मोय प्रेम तमारो।।
मोहन नैन के बान लगे।
मुरझाइ परी कोई आए सम्हारो।।

वीर सरीर की यह गत है गई
वैद मिले मोय नंददुलारौ
खोल री घूँघट खोलूँ कहा
बसो आँखिन मोर की पाखन वारो

भावार्थ- *तेज़ गति से नृत्य करती हुई वह गोपी खिड़की से फिरकी की तरह गिर गई। अपनी दशा बताते हुए कहती हैं, "हे सखी! मुझे प्रेम रूपी बुखार ने आ घेरा है। मोहन के नयन रूपी बाणों से बिंधकर मैं मुरझाकर गिर पड़ी हूँ, कोई आकर मुझे सम्भालें। "अरे सखी! मेरे शरीर की क्या गति हो गई है। नंद के दुलारे ही मेरे वैद्य हैं - वे शीघ्र मुझे कब मिलेंगे।" दूसरी सखी कहती हैं, "शीघ्र घूँघट खोल और दर्शन कर लें।" पहली सखी हँस के पुनः कहती है, "हे सखी! घूँघट क्यों खोलूँ जब मेरे नयनों में ही मोर का पँख धारण किये हुए श्यामसुन्दर आ बसे हैं।"*

नाचत बलभद्र वीर संग लिये युवती भीर
रासरच्यो दिव्य तीर तनिया कलिंद की
नाच उठी यमुन लहर चंद चाँदनी को पहर
पीत पटि लहर लहर नाची नंदनन्द की

भावार्थ- *बलराम और श्रीकृष्ण युवतियों की भीड़ को लेकर नृत्य कर रहे हैं। पीताम्बर धारण किये हुए भगवान् श्रीकृष्ण यमुनाजी के दिव्य तट पर रास कर रहे हैं। यमुना की लहरें भी नृत्य कर रही हैं तथा उस समय सभी ओर चन्द्रमा की चाँदनी फैली हुई है। नृत्य करते हुए नन्द के पुत्र (श्रीकृष्ण) का पीला पटका भी हिल रहा है।*

नचे बाल तालन पै श्रम बिंदु भालन पै
सजी कमल मालन पै अवली अलि वृन्द की
राधा रँग राच रही पलक खोल जाँच रही
नैनन में नाच रही मूरति गोविन्द की।

भावार्थ- *सभी ब्रजबालाऐं संगीत की ताल पर नृत्य कर रही हैं, जिससे उनके मस्तक पर श्रम बिंदु झलक रहे हैं। समस्त सखी मण्डल के वक्षःस्थल पर कमलों की मालाएं सजी हुई हैं जिसपर भौरों की पंक्तियाँ मँडरा रही हैं। राधारानी इस रचे हुए रंग को पलक खोलकर निहार रही है। उनकी आँखों में गोविन्द की मूर्ति नृत्य करती हुई प्रतीत हो रही है।*

मण्डल रास विलास महारस, मण्डल श्रीवृषभानु दुलारी
मण्डित गोप संगीत भरी, उत राजत कोटिक गोप कुमारी
प्रीतम के मुख कंज पे सोभित, अनंदन अंग अनंग निवारी
ताल तरंगन रंग बढ्यो ऐसे राधिका माधव की बलिहारी

भावार्थ- *रास नृत्य के मण्डल में आज महान आनन्द रस बह चला है। उस मण्डल में श्री राधा अत्यन्त विभूषित हैं। वह रास मण्डल कोटि-कोटि गोपकुमारियों की सुन्दर स्वर लहरियों से गुंजायमान है। प्रियतम श्री कृष्ण के मुख पर छाये हुए आनन्द की शोभा एसी है जो कामदेव की शोभा को लज्जित कर दे। सारा वातावरण ताल और स्वर के रंग से भर रहा है, और सारी सखियाँ श्री राधा-माधव पर बारम्बार न्यौछावर होती जा रही हैं।*

नंदलाला बन्सी वाला। बसिया कैसी बजाई गईए रे
फिर बजाओ बांसुरी मैं वारी बंसी वारे जाते सुनत नींद नहीं रैन गिनत तारे
मोहि लई सब ब्रजनारी मैं वारी प्यारे सुन छैया, कन्हैया, मनभैया, हरजैया रे
सुनत बंसी सुधि-बुध बिसरी, लोक लाज कुल की सगरी सुन कान्हा मनमाना जगजाना पहचाना रे।

भावार्थ- *हे सखी, नंद के लाल ने कैसी सुंदर बंसी बजाई है! हे बंसीवाले! जिस वंशी ध्वनि से हमारी रातों की नींद उड़ गई है और सारी निशा हम बस बैठकर तारावली गिनती रहती हैं, हम विनती करती हैं, हमे फिरसे वह बंसी सुनाओ। हमारे मन की आशाओं को तोड़ने वाले कन्हैया! आपने समस्त ब्रज की नारियों का मन हर लिया है। आपकी वंशी ध्वनि को सुनकर हम लोक-लज्जा की सारी स्मृति भूल गयी हैं। सुनो कान्हा आपकी मनमानी को सारा जग पहचान चुका है।*

.....

कबतक चलता वह नृत्य अहो! कैसे बतलाऊँ मैं, प्रियतम!
आँखों में है अब तक पूरित हल्लीसक मुद्राएँ, प्रियतम!
शशधर है ठीक मध्य नभमें वैसे ही गति भूले, प्रियतम!
वे मुग्ध देखते हैं साँवर, बाला है नाच रही, प्रियतम!

भावार्थ - *यह नृत्य कब तक चलता अहो! मैं कैसे बतलाऊँ? अभी तक आँखों में हल्लीसक मुद्राएँ ज्यों-की-त्यों परिपूतिरत हें। निर्मल मध्य नभ के बीच में चन्द्रमा गति-भूले वैसे ही अवस्थित हैं। मुग्ध होकर सब देख रहे हैं, सबकी आँखें केन्द्रित हैं - गौर-नीलदम्पति के मनोहर नृत्य पर।*

वैसे ही कटि झुक जाती है बालाकी पल-पल में, प्रियतम!
अम्बर वक्षःस्थलका भी वह, वैसे ही चंचल है, प्रियतम!
वे कुण्डल भी वैसे ही हैं, हो रहे चपल दोनों, प्रियतम!
आनन-सरोजपर वैसे ही प्रस्वेद कणावलि है, प्रियतम!

भावार्थ - *पल-पल में राधा किशोरी की कटि उस भाँति ही झुक जाती है। वक्षस्थल का अञ्चल भी वैसे ही चञ्चल हो रहा है। दोनों कर्णकुण्डल भी वैसे ही चञ्चल हो रहे हैं, और मुख कमल पर वैसे ही प्रस्वेदकण झलमल रहे हैं।*

गिर रहे फूल वैसे ही हैं झर-झरकर अलकों से, प्रियतम!
साँवर अपने दुकूलमें हैं कर रहे चयन उनको, प्रियतम!
वैसे ही नाच-नाच करके साँवर भी, बालाकी, प्रियतम!
कर रहे सरस अनुमोदन हैं उन नृत्य-भंगियों का, प्रियतम!

भावार्थ - *अलकों से सुमन झर-झरकर वैसे ही रासस्थल को विभूषित कर रहे हैं। नील सुन्दर अपने पटके में उन सुमनों को चयन करते जा रहे हैं। उस भाँति ही नाच-नाचकर साँवर भी बाला की नृत्यभङ्गिमा का सरस अनुमोदन कर रहे हैं।*

रसमय तन्त्रोंके तार सभी वैसे ही झंकृत हैं, प्रियतम!
वैसे ही नूपुरका रुन-झुन सहयोग दे रहा है, प्रियतम!
वैसे ही तालबध भी है पल-पल नवीन होता, प्रियतम!
वैसे ही बज उठती है वह साँवरकी करताली, प्रियतम!

भावार्थ - *रसमय तन्त्रों के तार वैसे ही झंकृत हो रहे हैं। नूपुर का रुनझुन शब्द वैसे ही सहयोग दे रहा है। ताल की रचनाएँ उस भाँति ही पल-पल में नवीन होती जा रही है, और वैसे ही रह-रहकर नीलसुन्दर की हाथों से ताली भी बज उठती हैं। अस्तु।*

इसपर मैं किंतु सरस झीना आवरण डालकर ही, प्रियतम!
आगे चलती हूँ बालाको, साँवर को ले दृगमें, प्रियतम!
उस ओर नृत्य उन दोनों का अविराम चल रहा हैं, प्रियतम!
वे उधर उसी क्षण हैं निकुञ्ज पथमें भी चल पड़ते, प्रियतम!

भावार्थ - *इस पर मैं एक सरस झीना परदा डालकर ही आगे चल रही हूँ। साँवर को, राधाकिशोरी को अपनी आँखों में लिये हुए ही आगे बढ़ रही हूँ। उस ओर उन दोनों का नृत्य भी बिना विराम चल ही रहा है। साथ ही उधर देखो, उसी क्षण वे निकुञ्जपथ में भी चल पड़े हैं।*

.....

रास करि बैठे दोऊ पवन करति कोऊ
लै लै अंचल सौं पौछे स्रम वारि री।
करति प्रसंस कोऊ प्रेम भींजिं रहीं कोऊ
कोऊ रही रीझि बिबि बदन निहारि री।।
कोऊ पुहुपांजुलि वारें कोऊ तृन तोरि डारें
कोऊ जल पीबत हैं बार बार वारि री।
कोऊ रीझि गावनि पै कोऊ रीझि निर्तनि पै
वृन्दावन हित रूप करैं मनुहारि री।।

भावार्थ - *अद्‌भुत रास करके श्रीप्रिया-प्रियतम सुन्दर सिंहासन पर आसीन है। उनको विश्राम देने हेतु कोई सखी उन्हें पंखा झलने लगती है और कोई अपने आंचल से उनके श्रम बिन्दु पौंछने लगती है। एक सखी उनकी प्रशंसा करती है तो दूसरी सखि उनके प्रेम में डूबती जा रही है। कोई सखी पुष्पांजलि छोड़ती है, कोई तृण तोड़ती है, कोई जल पीकर वारि जाती है। कोई गाने पर, कोई नृत्य पर रीझ रही है। वृन्दावनदासजी कहते हैं कि कोई सखी दोनों को लाड़ करने में व्यस्त है।*

.....

वारति अलि मृगनैंनी आरति।
निज सहचरि इच्छा अनुसारनि समझि सैंन की सैना बैंनी।।
जगमग जोति जगति दीपावलि कनक थार मधि सचित सुचैंनी।
श्रीहरिप्रिया हितवाय हियनि में लै बलाय सनमुख सुख दैंनी।।

मृगनैनी सखी श्रीप्रिया प्रियतम की आरती उतार रही है। अपनी सखी के आँखों का निद्रापूर्ण संकेत समझ रही है। सुन्दर सजी हुई सोने की थाली के मध्य में आरती का दीपक दीपावली की ज्योति की भाँति जगमगा रहा है।

लँड़ैती जू के नैननि नींद घुरी।
आलस-बस, जोबन बस, मद-बस, पिय के अंक ढुरी।।
पिय कर परस्यौ सहज चिबुक सौ औचक चौकि परी।
बावरी सखी 'हित व्यास' सुवन बल देखत लतन दुरी।।

श्री लाड़लीजू के नयनों में नींद भरी हुई है। आलस, यौवन और मद के नशे में मग्न होकर वे प्रियतम की गोद में लुढ़क गईं। श्री श्यामसुन्दर ने हलके से जब उनकी ठोड़ी का स्पर्श किया तब किशोरी अचानक चौंक के उठ गईं। हित व्यास जी कहते हैं कि बावरी सखी इस सारे दृश्य को फूलों की लताओं में छिपकर देख रही हैं।

सुनो प्यारी हो कुँवरि राधे, निकुंजन पौढ़िये सकुमार
भलो रस हो रास में आज, रह्यौ तुम्हरी कृपा अनुसार
रैन अबहो बहुत थोरी रह्यो तजि केलि चतुर सुजान
रसिक प्रीतम सदा मेरो हा-हा हँसि कहो कृपानिधान

एक सखी कहती हैं - 'हे राधाकिशोरी! प्रियतम सहित निकुंज में शयन करने की कृपा करें। आज आपकी कृपा से रास में अत्यन्त सुन्दर रस का प्रवाह बहा है। रात अब बहुत थोड़ी रह गई है। इसलिए, हे चतुर, हे सुजान, रास केलि को छोड़ दीजिए। कवि रसिक के निज प्रियतम श्रीकृष्ण ने (हाँ हाँ कहकर) हँसते हुए अपनी सहमति प्रदान की।

आनन्द रहो ब्रज चंद्र दोऊ
शुभ सगुन सदा तुमको आवें।
नित ही रस केलि करो मिलिके
हम निरखि निरखि अतिशय सुख पावैं।।
यह धन हमसे रंकन को मिल्यो
हम कहा लौं विधाता के गुण गावें।
नारायण आशीष करें हम
तुमहूँ पौढ़ो हमहूँ जावे।।

सखियाँ गाती हैं - हे श्रीयुगल! आप सदा आनन्दित रहें, सभी शुभ शगुन आप पर ही आयें। आप नित्य ही रस केलि करते रहें, एवं हम देख-देख कर आनन्दित होते रहें। यह धन (आपकी सेवा) हम जैसे दरिद्रों को मिला, इसके लिये हम कहाँ तक विधाता के गुण गायें। नारायणदास जी कहते हैं कि सखियाँ आशीष देती हुई विनती करती हैंकि आप भी शयन करें और हम भी आपको एकान्त में छोड़ दें।

कुंज पधारौ राधे! रँग भरी रैन।
रँगभरी दुलहिन, रंग भरे पिय स्यामसुन्दर सुखदैन।।
रँगभरी सयनी बिछी सेज पर, रँग भर्यौ उलहत मैन।
रसिक बिहारि पिय प्यारी दोऊ मिल, करौ सेज सुख सैन।।

कुँज पधारो राधे, आनन्द भरी रात्रि हो। एक तरफ प्रेम भरी दुलहन है, दूसरी ओर प्रेम से भरे सुख देने वाले प्यारे श्यामसुन्दर हैं। सुखद सेज बिछी हुई है ऐसा रंगभराहुआ है जो कामदेव के सुख को भी उलाहना दे रहा है। रसिक बिहारी जी प्रार्थना करते हैं कि प्रिय प्रियतम दोनों मिलकर सुखद सेज पर शयन करें।

हौले हौले महल की धरती चरण धरंत
अति मदमाति लाडली गजगत लिएँ डुलंत
लाडली लाल के मदमाती गजगत लिएँ डोले
मरकत मणि के अहल-महल में चरण धरत हौले-हौले
लटकी लट अटकी अंसनि पर चटकीली चख लौले
लसन हसन में दसन सिखर दुति रंगी रंग तमोले
झुक-झुक देत-लेत अधरामृत समरस पान कपोले
श्री हरिप्रिया हितवाय जियन में वारत प्राण अमोलें

धीरे-धीरे महल की भूमि पर पग रखते हुए श्रीप्रिया प्रियतम मदमस्त चाल से चल रहे हैं। मरकत मणि से सजे हुए महल में वे चरण रखते हुए मन्द गति से चले जा रहे हैं। झूमती हुई लटें कन्धे पर ही उलझकर रह गई और चमकती हुई आँखें झुकने लगीं। मनमोहक हँसी में दाँतों की सफेदी पान के रंग में रग गई है। श्रीप्रिया-प्रियतम झुक झुककर परस्पर अधरामृत का पान करते हैं तथा उनके कपोलों में पान का बीड़ा सुशोभित है। श्रीहरि प्रियाजी का हृदय प्रेम से भर रहा है। तथा उनका सारा तन, मन और धन इस अनुपम छवि पर न्यौछावर जा रहा है।

अब पौढ़न कौ समय भयो।
इत ढुर गई दुमन की छैयाँ उत ढुरि चंद गयो।
पौढ़ि रहे दोउ सुखद सेज पर बाढ़त रंग नयो।
रसिक बिहारि बिहारिन पौढ़े यह सुख दृगन लयो।।

अब रात्रि शयन करने का समय हो गया। इधर वृक्षों की छाया ढल गयी है और उधर चन्द्रमा भी अस्ताचल की ओर चले गये हैं। सुखदायनी शय्या पर दोनों लेटे हुए हैं। प्रतिक्षण अभिनव आनन्द की अभिवृद्धि हो रही है। कवि रसिक कहते हैं कि लीलाबिहारी श्रीकृष्ण और बिहारनि राधा, दोनों ही शय्या पर लेटे हुए हैं। इस झाँकी के दर्शन का सुख आँखों को प्राप्त हुआ है, यह कैसा अनुपम सौभाग्य है।

राधे कृष्ण राधे कृष्ण कृष्ण कृष्ण राधे राधे
राधे श्याम राधे श्याम श्याम श्याम राधे राधे।
जय वृन्दावन जय यमुना, जय वंशीवट जय वृन्दा
जय जय जय राधा अभिराम, जय जय जय माधव गुणधाम
जय जय पावन नन्दग्राम, जय बरसाना पूरणकाम
जय रासेश्वरी रूप ललाम, जय रसिकेन्द्र शिरोमणि श्याम

धनि धनि लाड़िली के चरन।
अतिहि मृदुल सुगंध सीतल कमल के से बरन।।
नख चंद चारू अनूप राजत जोत जगमग करन।
कुणित नूपुर कुंज बिहरत परम कौतुक करन।।
नंद सुत मन मोद कारी बिरह सागर तरन।
दास परमानंद छिन छिन स्याम ताकी सरन।।

श्रीलाडिली के चरण ही परम धन हैं। वे कमल के समान कोमल एवं सुगन्ध से युक्त हैं। उनके नखों से चन्द्रमा के समान प्रकाश निकल रहा है, तथा सुंदर नूपुर बाँधे वे कुञ्जों में विहार करती हुई विभिन्न लीलाएँ करतीं हैं। श्री राधा के चरण नंदनंदन के विरह ताप को हरने वाले हैं। परमानंददास जी कहते हैं कि श्यामसुन्दर बार-बार श्रीजी से उनके चरणों की शरण माँगते हैं।